B.A-II (Hons)
Paper-III
Unit-I Topic

सामान्य व्यवहार एवं असामान्य व्यवहार में अन्तर

Difference between Normal behaviour and Abnormal behaviour.

सामान्य व्यवहार एवं असामान्य व्यवहार में निम्नांकित अंतर है -

1. सूझपूर्ण व्यवहार (Insightful behaviour) - सामान्य व्यवहार हमेशा सूझपूर्ण होता है। एक सामान्य व्यक्ति को इस बात का स्पष्ट सूझ होता है कि वह क्या कर रहा है, कैसे कर रहा है, उसे कौन-सा व्यवहार किस परिस्थिति में करना चाहिए और किस परिस्थिति में नहीं करना चाहिए आदि, आदि। ऐसे व्यक्तियों को नैतिक-अनैतिक एवं सही-गलत का भी यथेष्ट ज्ञान रहता है। असामान्य व्यवहार में इन गुणों की कमी पायी जाती है। असामान्य व्यक्ति को न के बराबर नैतिक एवं अनैतिक में अन्तर तथा सही एवं गलत में अन्तर की सूझ-बूझ रहती है। प्रत्येक कार्य जिसे वह करता है उसे सही लगता है चाहे वह कितना भी गलत एवं अनैतिक कार्य ही क्यों न हो।

2. संतुलित सामाजिक समायोजन (Balanced Social adjustment) - सामान्य व्यक्ति के परिवार में सदस्यों के साथ, पास-पड़ोसियों एवं अपने सहयोगियों के साथ सौहार्द्रपूर्ण सामाजिक सम्बन्ध होता है। फलस्वरूप उसका सामाजिक समायोजन पूर्णत: संतुलित होता है। ऐसे व्यक्ति समाज के नियमों एवं रीति-रिवाजों का आदर करते हैं और उसी के अनुकूल एक सौहार्द्रपूर्ण सामाजिक संबंध बनाये रखने की कोशिश करते हैं। असामान्य व्यक्ति सामाजिक नियमों एवं रीति-रिवाजों को अनदेखी करके व्यवहार करता है। ऐसे व्यक्तियों की दुनिया निजी होती है जो वास्तविक सामाजिक वातावरण से भिन्न होता है। ऐसे व्यक्तियों में सामाजिक समायोजन की समस्याएँ तीव्र होती है और इनके व्यवहार में सामाजिक कुसमायोजन अपनी चरम सीमा पर होती है। ऐसे व्यक्तियों में सहयोग की भावना और मिल-जुलकर काम करने की प्रवृत्ति का सर्वथा अभाव रहता है।

3. सांवेगिक परिपक्वता एवं नियंत्रण (Emotional maturity and Control) - सामान्य व्यक्तियों का सांवेगिक व्यवहार संतुलित एवं नियंत्रित होता है। दूसरे शब्दों में, ऐसे व्यक्तियों को अपने संवेग की अभिव्यक्ति एवं उसके स्तर पर पूर्ण नियंत्रण रहता है। वह परिस्थिति के अनुकूल ही क्रोध, प्रेम, डर आदि जैसे संवेगों की अभिव्यक्ति करता है।

उसके संवेगात्मक व्यवहार में स्थिरता एवं व्यवस्थितता दिखलाई पड़ती है। दूसरी तरफ असामान्य व्यक्तियों के सांवेगिक व्यवहार में अस्थिरता एवं अपरिपक्वता दिखलाई पड़ता है। ऐसे व्यक्तियों को अपने संवेग पर नियंत्रण भी नहीं रहता है और परिस्थिति के अनुकूल संवेग की अभिव्यक्ति का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। ऐसे व्यक्ति अकारण ही खुश हो जाते हैं और फिर अकारण ही दुखी हो जाते हैं। अन्य लोगों को उनकी खुशी का न तो कारण पता चलता है और न ही उनके दुख का ही। इस तरह से असामान्य व्यक्तियों का व्यवहार सामान्य व्यक्तियों के व्यवहार से सांवेगिक रूप से पूर्णतः भिन्न होता है

To be Continued